मृगाङ्कलेखा

* उपन्यास *

पण्डित शिवनाथ शर्मा द्वारा विरचित

लखनऊ

श्रीदामोदर प्रेस में मुद्रित

प्रथम आवृत्ति मूल्य ≈)

मृगाङ्कलेखा।

प्रथम अध्याय।

प्रभात का समय है, चारों ओर शांति मूर्तिमयी होकर विराज रही है। मैदान में दूरतक घासपर ओस के कण विचित्र शोभा दिखा रहे हैं। मालूम होता है, आकाश से मोतियोंकी वर्षा हुई है या वसुमती देवी अपनी प्रियतमा सखी रात्रि के वियोग मे अश्रुमाला धारण किए है। एक ओर यह दृश्य है, दूसरी ओर छोटी पहाड़ियोंकी माला दूर तक चली गई है। इस पर्वत श्रेणी के पीछे, कुछ दूर पर और भी पहाड़ियां हैं किन्तु उनके वृक्ष दूरी के कारण श्यामायमान होनेके अतिरिक्त और कुछ प्रत्यक्षता सूचित नहीं करते किन्तु हां, ध्यान देनेसे यह बोध होता है कि पृथ्वी के इस मनोहर भाग को उत्तम समझ कर प्रकृति देवीने एक परिपुष्ट चहार दीवारी निर्मण करनेके अभिप्राय से इस शैल समूहकी रचना की है। इसस्थानकी पूर्ण शोभा देखनेके निमित्त चक्षु ललचाकर कविवर बिहारीकी उस उक्तिका प्रत्यक्ष उदाहरण होरहे थे जहां परउसने कहा है—

" इन अखियां दुखियान को सुख सिरजोई नाहि।
देखत बने न देखते बिन देखे अकुलाहि॥ "

सम्मुख छोटी पहाड़ी पर वृक्षों का छोटासा कुंज लगा हुआ है। उसमे लताओंके पत्ते इस प्रकार घूम घूम कर चढ़े हैं मानो वह अपने प्रियतम वृक्षोंसे प्रेमालिंगन कररहीहैं। इसी कुंजसे एक स्वच्छ झरना निकल कर नीचे की ओर बह रहा है। उसका जल ऊपर से गिरता हुआ आकाशकी प्रभा पाकर साक्षात् भूतनाथ महादेव की जटा से निकल कर महीतल को पवित्र करने वाली जन्हुनंदनी भागीरथी का लघु चित्र खींच देता है।

इसी कुंज में से एक मृग निकला । झरने के पास आकर जल पीने लगा । एकाकी उसने मस्तक उठाकर वायु को सूंघा ? चारों तरफ देखा ? पानी पीना छोडकर दोचार कदम उठाकर बडी साव धानी से कुछ सुनने लगा और एक दम चौकडी भर कर मैदान में दौडने लगा ।

दूसरा अध्याय ।

हैं यह क्या ? इस शान्ति देवी के स्थान में यह उपद्रव कैसा ? यह भयंकर रव और तुमुळ शब्द कहां से हो रहाहै।बिगुळ का शब्द धीरे २ बढने लगा है । जान पडता है वीरयोद्धाओं को लिये कोई सेनापति इधर आरहाहै। अब, घोडों की टांप साफ सुनाई पडतीहैं अब. हृदय कम्पायमान करदेनेवाली ललकार स्पष्ट श्रुतगोचर होती है। " मार लिया है जाने न पावे "—" साबास वीरों साबास " कहता हुआ कोई चला आरहा है । टापों की एक साथ आवाज निकलने से थोडीही देरमें भयंकर घडघडाहट होने लगीहै। घु-घु-घु करके दूसरा बिगुल जितने बेग से बोला उससे मालुम हुआ कि सैनिक दळ बहुत सन्निकट आगया है ।

पार्श्ववर्ती पहाडी के पास से होकर यह सैन्यदल जाने लगा है । यह इतने सन्निकट हैं कि सैनिकोंकी बात चीत तक सुनाई पडती है । पहळे हल्ला करते सैनिकों का विभाग वडे बेग से निकळ गया उसके पश्चात जो आए वह कुछ कम बेग में थे और फिर पीछे आने वालों की चाल में और भी कमी जान पडी । अबजो सैनिक पीछे हैं वह बिलकुल साधारण चाल से घोडा फेकते आरहे हैं। परस्पर बात चीत भी करते जाते हैं । या तो यह युद्ध कार्य

से भयमान कर या आगे चले जाने वालों के पास तक पहुंचने में हताश होकर धीरे चलने लगे हैं। इनकी बात चीत होरही थी कि पीछेसे एकसवार वडे वेगसे घोडा फेंकता हुआ इनके आगे निकला। एक ने कहा " वाह भाई तिलोचन सिंह आज की बिजय तुम्हारेही हाथ है " " इसी चाल से चले गए तो पहुंच ही गए " यह कहकर यह दोनों कुछ ठहरे थे कि वातही वात में तिलोचनसिंह का घोडा वेगसे जाता हुआ पर्वत श्रेणी के मध्य मे अदृष्ट होगया।

एकने कहा—" इसका समय पर पहुंचना कठिन है। "

दूसरा बोला—" अच्छा सवार है, घोडा भी उसकी सेना भरमें प्रसिद्ध है क्यों न पहुंचेगा ? ॥

एक ने फिर कहा—" खैर हमसे क्या मतलब हमने तो निश्चय कर लिया है कि आजकी दौडमें पीछेही रहना ठीकहै।एक तो शरीर ठीक नहीं है दूसरे जब अपने विरुद्ध लोग षडचक्र—रच रहे हैं तो अलगही रहना उचित है।

दूसरा बोला—" इस पाप का फल उनको अवश्य मिलेगा "

पहला बोला—" मिले या न मिले कौनजानता है ? मित्र जोरा वर सिंह स्वार्थ के लिये मनुष्य उचित अनुचित सब कुछ करने को उद्यत होजाता है। "

इनकी यह वार्ता समाप्त नहीं होने पाईथी कि एक ओर से गान काशब्द सुनाईपडा।

॥ गान ॥

दयानिधि कौन बात नहि आई।
जासों दुखित थकित प्रेमिन की आश रही सकुचाई ।
का करुणा काढि कठिन हरी प्रभु के कछु रही जुड़ाई ?

बारबार बिनवतहूं जावस कोरी भरी चुपाई ।
मंगल मय मूरति स्वरूप की का कछु प्रभा बिहाई ॥
जासों प्रेम प्रथा सो पूरित कथा श्रवण बिलगाई ।

इस मधुरालापित गानको सुनतेही दोनों सवार जिधरसे गान का शब्द आताथा उस ओर चले ॥

तीसरा अध्याय ।

सूर्य्य नारायण बहुत चढ़ आए हैं । धूप में तेजी की विशेषता का प्रभाव बढ़ने लगाहै । पर्वत प्रान्तकी हरित भूमि चमक उठी है । मैदान में मृग के पीछे अनेक सवार दौड़ते चले आरहे हैं । उन के साथ के शिकारी कुत्ते भी बड़े बेगसे दौड़ रहेहैं । स्वान समूह की गर्जना की घोर ध्वनि पर्वत परसे प्रतिध्वनित हो उठती है दूरसे जिन बिगुलों का शब्द सुनकर युद्ध का अनुमान होताथा वह बिगुल शिकारी कुत्तों को उत्तेजना देने को बज रहे हैं ॥

हिरन इस मृगया से थकित होगया है । रुक २ कर भागताहै । सवार और कुत्ते जब दौड़कर उसके सन्निकट पहुंचते हैं तब वह ऐसी कुलांच भरके चौकड़ी लगाता है कि सब बहुत पीछे रहजाते हैं । इस प्रकार अनेकों बार मृग को मार लेने की पूरी आशा हुई, पर कुछ सफलता नहीं हुई । घोड़े मृगया के मारे पसीनेमें तरबतर हो-गए । कई थक २ कर ठहर गए । कितनेही अश्व कूद फांद में गिर कर दौड़में असमर्थ होगए । दिनभर बिना भोजन और जलके मृग के पीछे दौड़ना सहज साहस नहीं था । इस प्रकार थकने और ठहरने का अवसर सबही को प्राप्त होगया किन्तु केवल दो सवार मृगका पीछा करते बहुत दूर निकलगए । मृग बिलकुल समीप आगया था आगे पहाड़ी थी, उस में भागने का मार्गावरोध

समझ कर यह दोनों दौड़े। इनके दो कुत्ते भी साथमें बड़े उत्साह से आगे बढ़े हिरन थक कर कुत्तों का सामना करने को खड़ा हो गया था। उसका मार लेना समीप दृष्टि आता था।

ज्योंही सवार समीपमें पहुंचे कि मृग चौकड़ी भरकर पहाड़ी पर कूद गया। साथ ही दोनों सवारों ने भी घोड़ा उसके पीछे फेंका। एक सवार और दो कुत्ते तो ऊंचाई पर पहुंच गए पर दूसरे सवार का घोड़ा फिसल कर नीचे आगिरा। मृग को समीप जान कर प्रथम सवार अपने साथी की सहायता बिना फिर ही घोड़ा फेंकता हुआ आगे निकल गया।

चौथा अध्याय।

पहाड़ी प्रान्त की निम्न भूमि पर छोटी छोटी चट्टानों से घिरा हुआ एक स्थान है। वहां का मार्ग बहुत घूमा हुआ है, और उस में दोनों ओर इस प्रकार वृक्ष लगे हुए हैं कि कहीं कहीं पर शाखाओं को हाथ से बढाकर चलना पड़ता है। ऐसेही मार्गमे दोसवार आरहे थे। उन के शिरोभाग पर मार्गावरोधक वृक्षों के पत्तोंसे लटक कर गिरने वाले ओस बिन्दु कहीं कहीं पर ऐसी शीघ्रता से गिरने लगते थे कि वर्षा का भ्रम होजाता था। इस मार्ग को तय करने में सवार एक प्रकार असमर्थ होगए क्योंकि आगे बढ़कर एक चौड़ी जगह मिली और वहां से चट्टानों पर चढ़कर जाने का ऐसा तंग मार्ग था कि घोड़ों का वहां पर गुजर नहीं था। लाचार घोड़ों को वहांही छोड़कर यह दोनो साहसी पुरुष पहाड़ी पर चढ़कर चलने लगे। जिस गान की धुनि सुनकर वह इस ओर आए थे अब उस का शब्द और भी स्पष्ट होने लगा था। एक सवार ने अपने साथी से कहा—

" जान पड़ता है कि सांसारिक व्यवहार से विरक्त होकर किसी महात्मा ने अपना आश्रम इस निगूढ़ स्थान मे नियत किया है । "

दूसरे ने उत्तर दिया—" तुम्हारा अनुमान बहुत ठीक है । सम्भव है कि हम लोगों के आने से इस तपस्वी पुरुष की पूजा में कुछ विघात पड़े । इस लिये जब तक यह भजन में लीन हैं तब तक वहांही ठहरना चाहिये । „

इस प्रकार बातें करते यह चल रहे थे कि पर्वत का मार्ग पूरा होगया । और सामने हरित दूर्वा मई पृथ्वी दृष्टि गोचर हुई । एक ने कहा—" वाह ! क्या सुन्दर स्थान है, हरी घास की सोभा एसी जान पड़ती है जैसे पन्ने की जड़ी हुई चटाई बिछी हो—

उस के साथी ने कहा " चुप रहो देखो " और उंगली से एक मन्दिर को दिखाया जिस के अन्दर से गान का शब्द आरहा था । यह दोनों वीर चार कदम चलकर मन्दिर के चबुतरे की पृथ्वी के पास घास पर बैठ गये और वहां से भजन सुनने लगे ।

गान ।

प्रभु मझधार नाव अटकी ॥
खेवन कठिन भ्रमर जाल इत उत उठाय पटकी ॥
पवन वेग जल उठत शैल सम फिरत लहर भटकी ॥
घह घहात जल बहत किनारन गिरत भूमि तटकी ॥
" कमलाशन " यहि वार पार के हेतु ईश रटकी ॥
आओ मम करुणा के वरतन ।
हम तुम दोउ मिलि प्रेमहि वरतन ।
जानत हम कछु चरतन बरतन ।
मुदित रहत लखि तुमरो वरतन ।

तव महिमा सम कौन नव रतन ।

" कमलापन " जेहि करै प्रवरतन ?

इस प्रकार बड़ी देरतक यह दोनों पथिक भजन श्रवण करके अपने को कृतार्थ मानते रहे ।

पांचवां अध्याय ।

जिस मृग का पीछा करते हुए सैंकड़ों सवार दौड़ रहे थे, उसके पीछे केवल एक सवार और दो कुत्तों के अतिरिक्त और कोई दृष्टि गोचर नहीं होता था । कुछ थक कर बैठ रहे, कुछ गिर कर रुक गए, कुछ मृग के दौड़ने की फुर्ती देख कर हताश होगए । किन्तु एक वीर सवार अभी तक मृग का पीछे किए जा रहा है । ऊपरी ज़मीन से नीचे और नीचे से फिर ऊपर जाता है । अश्व मारे श्वेद के आर्द्र हो रहा है । सवार दिन भर की दौड़ धूप से बिलकुल थक गया है । किन्तु इस अद्भुत मृगका शिकार करने की नामवरी उसको उद्योग पर उद्यत किए हुई है और प्राणों का भय मृग को दौड़ा रहा है । वह जीवन से हताश होकर कई बार बिल-कुल ठहर गया, माळूम हुआ अब मृत्यु का ग्रास हुआ चाहता है, किन्तु कुत्तों के पास आते ही प्राण रक्षा के स्वभाव ने फिर उस को भगा दिया ।

अबकी बार हिरन एक चट्टान के पास ठहरा, और कुत्तों की तरफ सींग दिखा कर खड़ा हुआ । जान पड़ा कि अब उसने लड़ कर मरने की ठानली है । कुत्ते भौंकते हुए हिरन के पास ठहर गए । युद्ध के निमित मृग सींग दिखाने वाले हिरन के सामने कुत्तों का शिकारी स्वभाव थोड़ी देर भूल गया । कुछ ठहर कर एक कुत्ते ने वार किया पर शृंग प्रहार की चोट उसको फिर पीछे लौटा लाई । इतने ही में सवार कुत्तों को उत्तेजना देता और भाला

तानकर मृग की तरफ घोड़ा दौड़ा कर झपटा । ज्यों ही वह पास पहुंचा कि मृग पार्श्व वर्ती झाड़ी में घुस गया । कुत्ते भी उसके पीछे झाड़ी में चले गए । किन्तु सवार का घोड़ा भी एक दम ज़मीन पर गिर कर अन्तिम स्वांस लेने लगा और इस सृष्टि से सर्वदा के लिये विदा हुआ ।

थोड़ी देर के बाद एक कुत्ता टांगों में दुम दबाए झाड़ी में से बाहर आया—उसको देख कर सवार ने कहा—" तू जीता है पर अश्व अपने कर्तव्य से मुक्त होगया ,, इतना कहकर बिगुल देकर दूसरे कुत्ते को बुलाने लगा । सायंकाल होगया था । बिगुलकी प्रति ध्वनि दूर वर्ती पर्वतों से आई और साथ ही कुत्ते के भौंकने का शब्द भी सुनाई पड़ा । मालूम हुआ कुत्ता मृग के पीछे दूर तक चला गया है । सघन झाड़ियों में वीर मृगया—प्रेमी का जाना असम्भव है । उसने फिर बिगुल देकर कुत्ते को बुलाया । थोड़ी देर के बाद वह स्वान भी लौट कर आगया । सीटी बजाता हुआ वीर दोनों कुत्तों के साथ में लिये पर्वत प्रान्त की सायंकाल की बहार देखता हुआ घरको लौटा ।

छठा अध्याय ।

पहाड़ियों के मध्य में एक परम सुन्दर शिवालय के पास दो-वीर युवा भजन सुन रहे हैं । कुछ देर बाद मन्दिर का द्वार खुला अन्दर से एक परम स्वरूपवती युवती बाहर आई और द्वार शून्य कर ज्योंही वह परिक्रमा करती हुई , दक्षिण तरफ घूमी कि उस की दृष्टि इन दोनों युवा पुरुषों पर पड़ी । बड़ी फुरती से उसने घूंघट घसीटा और नीचे उतरकर वृक्षों के कुंज में चली गई । दोनों युवा देखते हुचक रहगए ।

इन युवक. वीरों को देखकर उस युवती का एका की मुंह ढक कर चल आना भी सोभा से खाली नहीं था। इस प्रकारकी छवि के सम्बन्ध में भी कवि बड़ी २ मनो ग्राहिणी उपमा देने का अवसर पाते हैं। चन्द्रमा का घूंघट रूपी मेघ में आजाना, चन्द्र बिम्ब में राहुका आच्छादन कर लेना, या विजली की तरह तरप कर निकल जाना यह सब भावऐसे अवसर पर कवियोंके चित्तपर स्वाभाविक ही हो आते हैं। यदि कुछ ध्यान देकर वह विचारे तो घूंघट के ढकने को यों भी कह सकता है कि जिस इन्दु ने अंधकार को पराजित किया है मानो वह अन्धकार इन्दु को जीतने का उद्योग कर रहा है; या घूंघट को सुन्दरता की दृष्टि की दीठिसे बचाने का किला स्थापन करके एक अच्छी उत्प्रेक्षा देसकता है। कवि इस प्रकार सैकड़ों भावों की सृष्टिकर सकता है और इस प्रभासे युवकों पर जो प्रेम भाव उत्पन्न होता है उसकी कथा की अकथ कहानियां प्रायः सबही कवियों ने गाई हैं। किन्तु इन युवकों पर प्रेम के स्थान में आश्चर्य उत्पन्न हुआ, और उनमें से एक बोला—"क्यों मित्र भीम कुछ देखा?"

भीमसिंह ने इसके उत्तर में कहा—"आश्चर्य है इसका यहां आना कैसे हुआ!" यह कहकर बड़े विचार में निमग्न होकर बोला—"रामसिंह मेरा शिर घूमने लगा है, मुझे भ्रम होता है मैं स्वप्न देखरहा हूं या जागता हूं कुछ समझमें नहीं आता"

भीमसिंहने उत्तर दिया—"मुझे जरासाभी सन्देह नहीं यह वही है। पर आश्चर्य इस बातका है कि यह इस शून्य स्थान में क्योंकर आई?" इस बात को सुनकर रामसिंह खड़ा होगया और कहने लगा—"जब सन्देहही नहीं है तब विचार कैसा? चलो अभी इसी कुंज में घुसकर देखें यह किधर गई है। इसका पता लगालेना कुछ कठिन नहीं है।

इस प्रकार निश्चय करके यह लोग कुंज की ओर चले। एक पगडंडी पकड़ कर इन्हीं ने रास्ता लिया किन्तु कुछ आगे बढ़ कर पगडण्डी का कुछ चिन्ह नहीं मालूम पड़ा। भीम सिंह ने कहा—"बड़ी गहन झाड़ी लगी है अब आगे जाना कठिन है। संभव है कि आगे चलकर मार्ग भूल जावें तो यहां से लौटना कठिन होगा। महाराज की सेना से हटकर इधर आगये हैं। साथियों की क्या दशा हुई कुछ मालुम नहीं।"

यह सुनकर राम सिंह ने उत्तर दिया—"हां यह तो ठीक है कि साथियों के साथ मिलना अवश्य है। कदाचित शिकार खेलकर महाराज इधर लौटते हुए मिलें, पर इस स्त्री का भी तो पता लगाना अवश्य है" भीम सिंह बोला—"पता फिर लगा लेंगे। यहां ठहरने से कुछ काम नहीं बनता। झाड़ियों में घूमते २ रात होगई तो लौट कर जाना भी कठिन होगा।"

इस प्रकार सलाह कर के यह दोनों वीर जिस ओर से झाड़ियों के जंगल में घसे थे उसी तरफ से पीछे मुड़े और सेना से मिलने के अभिप्राय से लौटे।

सतवां अध्याय

सायंकाल का समय है, कोहरे के पड़ने का समान प्रकृति देवी ने आरंभ करदिया है। जहां तहां धूम्र के फैलने का सादृश्य दृष्टिगोचर होने लगा है। एसे समय में पर्वतों के मध्य में मार्ग में भटकता हुआ एक वीर युवा चलरहा है। कभी ऊपर चढ़ता है कभी निम्न भाग में आता किन्तु मार्ग का कुछ पता नहीं चलता: साथ में दो कुत्ते हैं वह भी दिन भर की दौड़ धूप से पिपासा कुल विश्राम चाहने की इच्छा करते हैं, जवान मुंह से लटकाए चल रहे हैं, पर भटके हुओं को विश्राम कहां? इस प्रकार घूमते

हुए वह युवा मन में कहने लगा—" आज दिन भर मृग के पीछे दौड़ने में व्यतीत हुआ जानपड़ता है रात भी इसी पर्वत प्रान्त की किसी चट्टान पर व्यतीत होगी "

इतने में एक खरगोस पास में होकर निकला कुत्ते उनके पीछे दौड़ते हुए भाड़ियों में घुस गए। युवा के मन में यह तरंग उठी कि पहाड़ी के ऊपर चढ़कर देखे कदाचित किसी ओर दीपक या अग्नि का चिन्ह दिखाई पड़े या मार्ग का कुछ पता लग जाय तो कुछ आश्चर्य नहीं। इस विचार में कुछ ऐसी साफल्यता की आशा जान पड़ी कि वह खरगोस का पीछा करने वाले श्वानों को बिना साथ में लिएही ऊपर चढ़ने लगा। मार्ग कठिन था; शरीर में थका-वट थी; पर आशा की माया भी अति दुस्तरहै। इसके सहारे बड़ेर कष्ट भी सहज में स्वीकार करलिए जाते हैं। इसी आशा के स-हारे यह वीर पहाड़ी की चोटी की तरफ चलने लगा। ज्यों ज्यों वह ऊंचा होता जाताथा त्यों त्यों उसको दूरकी जमीनकी अवस्था दिखाई पड़ती थी। बड़ी उत्कण्ठा से वह दीपक की चमक को दे-खने को इधर चारों तरफ दृष्टिडालता चल रहाथा पर दीपक की जगह किसी जुगनू के भी दर्शन नहीं होते थे।

पर आशा उसको अभी ऊपर लिये जारही है। आशावान उ-द्योग नहीं छोड़ता। ऊपर चढ़कर उसको कुछ दिखा। पर वहां से दूर मालुम होता था। दीपक या अग्नि के दर्शन नहीं थे किंतु एक भील या सरोवर का अनुमान होता था। अब कुछ दूर और चढ़ा भील की मूर्ति बढ़ती हुई दिखाई दी जान पड़ा कि कोई बड़ी भील दूर तक फैलती है उसके चारों ओर सघन वृक्ष लगे हैं। जितना वह ऊपर चढ़ता जाता उतनाही वह भील पास आती हुई दृष्टिगोचर होती यहां तक कि जब वह पहाड़ी की चोटी पर

पहुंचा तब उसको मालुम पड़ा कि यह पहाड़ी भी उस झील के किनारे पर है।

जलको देखकर हृदय शीतल होगया और वह प्रसन्न चित्त होकर झील की शोभा निहारने लगा। मन में कहने लगा—"वाह क्या सोभा है. इस सृष्टिपर भगवान ने क्या क्या मनोहर स्थान बनाए हैं। उसने बिगुल देकर कुत्तों को बुलाया पर केवल पार्श्व-र्ती पहाड़ों में से बिगुल की प्रतिध्वनि आने के किसी कुत्ते के भौं-कने की ध्वनि या झपटनेकी आहट नहीं आई।

"जान पड़ता है आज रात यहांही व्यतीत होगी—संभव है कि कुत्ते भी किसी हिंसक जीवों ने मार लिएहों—" यह कहकर युवाने अपना भला उठाया और पानी पीने की इच्छा से झील के तटकी ओर रवाना हुआ।

आठवां अध्याय

जिस शिव मन्दिर की झाड़ी में लौटते हुए भीमसिंह और रा-मसिंह को छोड़ आए थे वहांपर एक विचित्र वस्त्र पहने और हाथ में एक इकतारा लिए हुए एक पुरुष दिखाई पड़ा। इन दोनों को देखकर वह पीछेसे कूदता हुआ आ निकला और ज्योंही यह झाड़ी को तय करके शिवालय के निकट पहुंचे थे कि वह कूद कूद कर अपना इकतारा बजाकर इनके सामने आकर गाने लगा।

गीत

(१)

हाय हमारी जोरू, भाई हाय हमारी जोरू।
चूल्हा फूकत मूछें जरगई हाय हमारी जोरू॥
नरम नरम रोटी के टुकड़े यारों खूब बनाती।
मीठा दूध भरा अमृतसा लौंडों को पिलवाती।

चक्की पीस पिसान निकाबे बासन चम चम करती ॥
लहगां फरिया पहन बनी बिजलीसी झमझम करती।
गुन की पूरी पूरी करके मौजे खूब उड़ाती ॥
उसको याद करेसे भाइ फटता मरी जाती।
हाय हमारी जोरू भाई हाय हमारी जोरू ॥

इस प्रकार एकाकी इस पुरुष को कूद२ कर नाचते हुए देखकर रामसिंह और भीमसिंह दोनों बड़े बिसमय में होगए। यह कोई पागल है, या भिक्षुक हैं इन दोनों बातों से इन्हें उसका पागलही होना विशेष रूपसे प्रगट हुआ। रामसिंह ने अपने मनमें बिचारा कि संभव है। इस पुरुष की बातों से शिवालय में भजन करके चलीजाने वाली स्त्री का कुछ पता लगजाय और इसी अभिप्राय से उसने गायक के पास जाकर कहा—

"आपका गाना सुनकर हम बड़े प्रसन्न हुए। आप खूब गातेहैं।
इतना कहतेही उसने अपना इकतारा फिर छेड़ा-और गानेलगा।
अंग बन्धन सो तारत जोरू। बिन जोरू सब मानस गोरू।
हाय अरे तू किधर सिधारी। चूलहा फूंकत मूंछ उजारी।
दाढ़ो भई चूल्ह महं स्वाहा। भये लण्डूरे सब गुन ढाहा।
बासन मले हाथ कजराये। छाले पड़२ अधिक दुखाए।
अब हम धमकी जिसे दिखाये। फौरन थप्पड़ मुंह में खाये।
नटनी, रंडी, राण खानगी। देखी इन सब खूब बानगी।
रोवत रात होत नित भोरू। रोवत रहे हाय हम जोरू।

॥ पद ॥

जोरू सों इज्जत है सारी।
बनिता बिन कछु बात बनत नहिं रोवत बने भिखारी।
रोटीमोटी, दाल अलोनी, सड़ी बुसी तरकारी।

खावत करत बैलसों पागुर जोरू विन यह ख्वारी।
कौन हंसै अरु आन हंसावै बिन वह प्रियतमप्यारी।
लहंगा, फरिया, मटकचेले को करै सैन की वारी।
रण्डुआ मण्डुआ कहैं सबै जब बनै ब्रम्हआचारी।
" पंच " बिना जोरू के भाई सारा जग महतारी।

इस प्रकार गाकर यह पुरुष बहुत कूदा और फिर बड़े प्रेम से "हायहाय जोरू" करके रोने लगा। रामसिंह ने बड़े आग्रह से उसको बैठाया और फिर इनकी इस प्रकार बातचीत होनेलगी—

रामसिंह—क्यों मित्र आपका निवास स्थान कहां है।

गानेवाला—संसार में बिनाजोरू के कोई मित्र नहीं।

रामसिंह—अच्छा तो आपकी श्रीमती कहां हैं जिनके बियोग में आप घूमते फिरते हैं।

गानेवाला—अब तुमने मेरे मनकी पूछी। भाईउसका गुणानुवाद क्या करूं-हाय हाय वह सरूप, वह मधुरता, वह मन्द मुसकान हायरे हाय!

रामसिंह-आपका विवाह कहां हुआथा?

गानेवाला-चतुरपुर के एक ब्राह्मण की स्वरूपवती कन्या से। हाय जोरू।

राम--यहां आप क्यों आए।

गानेवाला-आप क्या यहांही रहते हैं।

रामसिंह-यहां कहां रहते हो।

गाने वाले ने इसारे से शिव मन्दिर बताया और फिर अपने वही गीत गाने लगा। बहुत कुछ इधर उधर की बात करके भीमसिंह ने उससे यह पूछा कि यहां कोई स्त्री रहती है कि नहीं। उत्तर में उसने कहा " यहां स्त्री कहां ? " रामसिंह ने उससे कहा प्रातःकाल

उसने अपनी आखों से एक स्त्री को मन्दिर के बाहर जाते हुए देखा था। कुछ देरतक तो गायक अपना गीत गाता रहा फिर हंसकर बोला-" यहां वनिता का नाम कहां, भाई तुमको भ्रम होगया—"

इकतारा उठाकर वह-" वनिता वनिता " कह कर कुछ गाना सुरू किया चाहता था कि रामसिंह ने म्यान से तरवार निकालकर कहा-" सचबता नहीं अभी गर्दन जमीन पर लोटने लगेगी।"

इसी प्रकार की एक दपट भीमसिंहने भी लगाई और उसकी झुटैया पकड़ कर कहा-ठीक कहो नहीं अभी प्राण जाते हैं।

गानेवाला कुछ भयभीत सा होकर बोला-

" अच्छा तो मुझे छोड़दो तो मैं तुझे उसके पास लेचलूं-" उसको भीमसिंहने छोड़दिया। और तरवारों को म्यान में करके दोनों बीर उस पागल के साथ हुए। भीमसिंहने रामसिंहसे इसारे से कहा कि यह अबडर गयाहै सब बता देगा। अब यह चुपचाप उसके पीछे चलने लगे।

नवम अध्याय।

रजनी का आगम भी बड़ी सुन्दरता से होता है। सूर्य्यास्त के समय से लेकर रात्रि के पूर्ण प्रभाव विस्तारित होने तक, पृथ्वी का प्रत्येक प्रान्त प्राकृतिक सोभासे परिपूर्णहो जाताहै। दिनान्त के अवसर पर अन्धकार का प्रभाव क्रमशः बढ़ता है और इसके बढ़न का क्रम युवावस्था के प्रादुर्भाव की तरह सांसारिक दृश्यको नवयौवना की विलक्षण रूपसे परिवर्तित होने वाली छवि के समान मनोहर बनादेता है। इस समय रात्रि बहुत सन्निकट आगई है, पास में खड़े हुए का मुंह कठिनता से पहचान पड़ता किन्तु सरोवर के तटपर आकाश और जल से मिलकर एक विचित्र अभिनय दिखाई पड़ रहा है। जलके तट से बीर युवाने दूर पर कुत्तों के भौंकने का शब्द

सुना और विगुल देकर उनको बुलाया और उनके आनेकी प्रत्याशा से पर्बत की ओर दृष्टि करके खड़ा हुआ। एकाकी जलमे कुछ शब्द हुआ और घूमकरदेखतेही एक छोटी नौका किनारेपर आई और उसमेसे एकयुवती उतरकर तटपर खड़ीहुई। युवा उसकी ओर बड़ी-आश्चर्य भरी दृष्टि से देखताही रहा कि वह एकको इसकेपास आकर बोली—'बलराम'

युवती ने यह शब्द बहुत निकट आकर कहे और उनके पास आगई कि बीर युवाको उसके स्वरूप की छवि की झलक से उसका स्वरूपाधिष्ठात्री होने का निश्चय होगया। किन्तु वह एक कदम पीछे हटकर बोला--"मैं बलराम नहीं हूं।,,

एकाकी अपरिचित पुरुष के सामने आकर इस शून्य स्थान मे बनिता का शिर घूम गया। एकदम शरीर मे स्वेद होआया उसका दिल धड़कने लगा वह एकदम अवाक होकर खड़ी होगई, पैर कांपने लगे। जानपड़ा पृथ्वी ढालू होकर गिराए देतीहै। रात्रि के आरंभ के कारण यद्यपि युवती के पूर्ण भयका बोध तो बीर युवा को नहीं हुआ किन्तु उसने आश्चर्य से पूछा-श्रीमती का स्थान क्या कहीं निकट स्थान मे है ?

इस प्रश्न से युवती को कुछ भरोसा हुआ और उसका भय संचार कुछ कम हुआ। और वह बोली--"भद्र मुख यहां से बहुत पास इसी सरोवर के तटपरहै' जिस समय देशमे पर्दा नहीं था यहां कि स्त्रियें अपरिचित से वार्ता करने मे घबड़ा नहीं जाती थीं। इतना कहने के बादही उसने फिर पूछा "आपका आगमन ?,,

बीर युवाने अपनी मृगया की कथा कही और उसको सुनकर वह बोली--"यह प्रांत मेरे पिता के आधीनहै यहांसे बिना अतिथि सत्कार ग्रहण किये जाना आपको उचित नहीं है ,,

इतना कहकर वह स्त्री अपनी नौकापर बैठी और बोली " मैं अभी किसी मनुष्य को आपके स्वागत के निमित्त भेजतीहूं । ,,

देखते २ नौका चलने लगी । वीर युवा आश्चय से उसकी ओर देखने लगा । उसने नौका मे इसे क्यों नहीं बैठाया ? संभव है वह छिपकर आई हो ? इसका स्वरूप अप्सराओं कासा है यह कुछ आश्चर्य तो नहीं ? इत्यादि बातों को विचारताहुआ यह वीर झीलके तटपर खड़ा हुआ विचारता था कि एकाकी कुत्ते दौड़कर इसके पास आकर कूदने लगे । " शाबाश शाबास " कहकर युवाने उनका उत्साह बढ़ाया किन्तु ध्यानमे उसी स्वरूपवती की बातें आती रहीं—

॥ दशम अध्याय ॥

भीमसिंह और रायसिंह को साथ लिए हुए " जोरू जोरू " कहकर गानेवाला पुरुष सघन वृक्षों के मध्य मे प्रवेश करता हुआ बड़े फेरफार के मार्ग से चलने लगा । वहां से घूमकर एक पहाड़ी पर चला फिर नीचे उतरा । सायंकाल का समय आगया पर उसका चक्कर लगाकर घूमना नहीं मिटा ।

रायसिंह ने अपने साथी से कहा—" इस पागल के पीछे कबतक घूमते रहोगे ? ऐसा तो नहीं है कि यह मार्ग भूल गयाहो तो बस रातभर इसी प्रकार भ्रमण करते व्यतीत हो । "

भीमसिंहने उत्तर दिया—"यदि मार्ग में हमको भुलादिया तो आज उसका शिर विना लिए तो यहांसे हम हटते नहींहैं ।" इतना कहकर उसने गाने वालेसे पूछा " क्यों जी जोरूदास ठीकहैन" ? यह सुनकर उसने अपना इकतारा फिर छेड़ा और " धन्य भये हम जोरूदास " कहकर गाना चाहता था कि भीमसिंह ने कहा—उस स्त्री के पास ले चलता है कि तरवार निकालूं ? "

जोरूदास—अरे चलतो रहेहैं और किस तरह चलें ।

भीमसिंह—अब कितनो दूर बाकी है ?

जोरूदास--अब आय पहुंचे हैं देर कुछ नहीं। इस पहाड़ परसे उतरे कि यथायोग्य स्थान पर पहुंच गए।

इस प्रकार बातें करते यह सब एक पहाड़ी की चोटीपर चढ़े। और वहां जाकर जोरूदास ने इनको एक नदी के किनारे जहां वृक्ष लगेथे वहांपर उसका स्थानबताया।इसने यह कहा कि वहां वह उनको अपने साथ ले नहीं जा सक्ता क्योंकि ऐसा करने सेउसको बड़ा कष्ट मिलेगा। पहाड़ी बड़ी ढालूथी, नीचे नदीथी। जरासा पैर फिसला नहीं कि नदी मे ढुलकर जापड़ना कोई बातही नहीं थी। इन तीनों मे बड़ा विषाद उपस्थित हुआ। भीम और राम उसको फिर शिर काटने की धमकी देने लगे—अन्त मे जोरूदास ने कहा—

"शिर काटलो भाई, यहतो होनाही है। तुमारे साथ नहीं चलेंगे तुम शिरकाटोगे वहां लेकर जायेंगे तो वह शिर काटेंगे?" यह कह कर उसने अपनी गर्दन झुकादी।

शरणापन्न पर वीरों का हाथ नहीं चलता। जोरूदास का इस प्रकार शिरझुकाना देखकर उसके चित्तमे दया आई। भीमसिंहने कहा-

"नदी के पास चलकर हमको तुम दूरसे वह स्थान दिखाकर चले आना"

जोरूदास—हम तुमारे साथ नहीं जामेंगे।

भीम—साथ चलने का कुछ काम नहीं तुम दूर खडे रहना

जोरूदास—वहांसझल के जाइयेगा शेरके गार में आना और वहां जाना बराबर है।

भीम—इसका कुछ भय नहीं!

रामसिंह—शेरके लिये हम सवासेर हैं।

जोरूदास—अच्छा तो धीरे धीरे चलिये। नदी यहांपर बड़ी गहरी है जमीन भी बड़ी ढालू है।

इतनी बातचीत करके यह तीनों पहाड़ी के ऊपरसे उतरनेलगे। रात्रि का समय होगया था। अन्धकार बिलकुल छागयाथा। ढालू जमीन पर यह तीनो बैठ बैठकर उतरने लगे। भीमने रामसिंह से कहा—बड़ी दुर्गम पहाड़ी पर आकर छिपी है। रामसिंह ने उत्तर दिया—यदि मिलजाय तो आज छिपने का पूरा फल मिल जावेगा।

यह यों कहकर उतर रहेथे कि जोरूदास "सांप अरे सांप" कहकर चिल्लाया और जोही "कहां कहां" करते भीम और राम उसके पास आए कि उसने बड़ी फुरती से दोनों को बलपूर्वक ऐसा धक्का दिया कि वह लुढ़कते हुए नदीमे जागिरे। जोरूदास अपना इकतारा लेकर ऊपरको भागा और यह दोनों वीर नदीके प्रवाहमे बहनेलगे-

एकादश अध्याय।

रातके समय वायु मण्डल की शान्तिकी झलक सरोवर या झील में शान्ति देवी का चित्र खींचदेती है। स्वच्छ जल मे स्वच्छ आकाशकी प्रभा और तारा मंडळ की प्रतिभा बढकर एक दूसरे गगन मंडल का प्रतिविम्ब बन रहा है। चारों ओर सून सान है। केवल मण्डूकगण अपना शब्द बडे कोलाहल से कर रहेहैं। इस अवसर पर एक छोटी नौकापर शिकारी बीर अपने कुत्तो को लिये एक मनुष्यके साथ बैठा हुआ यह प्राकृतिक शोभा देखता चला जाताहै। कुछ देर बाद शिकारी वीर ने कहा—"आपके सरदार का क्या नाम है?"

सिपाही—बीरमल्ल

शिकारी—वह वीर मल्ल तो नहीं जिसका नाम लूटमार के लिये प्रसिद्ध होरहा है। जिसको लोग बड़ाभारी डाकू कहते हैं।

सिपाही—यह बात आपके कहने की नहीं है लूट मार करना तो क्षत्रियों का धर्म है किन्तु बड़े जो काम करें उसको धर्म कहते और छोटों के कामको लूट मार बताते हैं।

शिकारी—क्या तुम लूट मार को क्षत्रियों का धर्म समझते हो ?

सिपाही—है ही है, इसमें समझना क्या ? जिस काम को चक्रवर्ती करें तो वह विजय और दुष्ट दमन समझा जावे और छोटे करें तो लूट मार डाका—यह स्वार्थ की माया है !

शिकारी—तुमारे सरदार तो महाराज की प्रजा को लूटते हैं इसमे क्या क्षत्रियत्व है।

सिपाही—है और अवश्य है। जब महाराज से उनका विरोध है तो वह लूट मार न्याय संगत है।—सामदाम भेद दण्ड यह वीरता के अंग हैं। जब सन्मुख दंड देने मे सामर्थ नहीं तो इस प्रकार का व्यवहार अधर्म नहीं।

शिकारी—(हंसकर) खैर मैं इस विषय की विशेष वार्ता इस समय करना नहीं चाहता मैं आपके सरदार के सन्मुख चल कर बताऊंगा कि उनका यह कार्य्य अधर्म है।

सिपाही-अच्छी बात है-किन्तु इस समय तो वीर मल्ल देव घर पर नहोंगे। बाहर गए हैं।

शिकारी—तो घरमें कौन है ?

सिपाही—घरमे है उनकी परम सुशीला पुत्री मृगांक लेखा जिससे आप से यहां साक्षात् हुआ है।

शिकारी-क्या वहां अकेली है।

सिपाही-नहीं और नौकर चाकर सब हैं केवल हमारे वीर मल्ल देव बाहर हैं।

शिकारी-वह कबतक लौटेंगे।

सिपाही—संभव है कि वह आजही लौटें, या दो दिन बाद यह ठीक नहीं कहा जा सकता।

इतनी बातों के होते हुए नौका अपने इष्ट स्थान पर पहुंची।

सामने से मसाल लिये कई मनुष्य आए और घाटपर नौका के पहुंचतेही वीर सिपाही को सादर गढ़ी के अन्दर ले चले ।

द्वादश अध्याय ।

वीरता भी, किसी समय, भारत वर्ष निवासियों में अनुपम गुण समझा जाता था। जिस प्रकार मुसलमानी राज्य में फारसी जानने वालों की प्रतिष्ठा थी, अंग्रेजी राज्यमे एम्, ए. आदिकी धूमहै,उसी प्रकार प्राचीन भारत वर्ष में वीरता की बड़ी प्रशंसा थी। उस समय में मनुष्य चाहे जितना पण्डित हो, समझदार या विचारवान हो किन्तु यदि उसके शरीर में बल, कार्य्य में साहस, प्रतिज्ञा में दृढता आपत्ति मे धैर्य्य आदि गुण नहीं होते थे तो वह निराव्यर्थ और निकम्माही गिना जाताथा। आजकल के एसे " नजाकत के पुतले " क्षत्री, अष्टावक्र के नातेदार से विद्वान्, या मांस के तोन्द का मटका वान्ध कर चलने वाले वैश्य कहीं स्वप्न में भी नहीं दिखाई देतेथे; धनिकों के घरमें बैठकर श्वान वृतिका आश्रय ग्रहण करने में पारंगत पण्डित और वेश्याओंके परमोपासक भक्त राजा लोग कहीं कल्पना में भी नहीं आते थे। राम, युधिष्ठिरादिकों की बातों की समता भी इदानीन्तन जड़ समाज के सभ्यों से देना एक प्रकार का पापही है, किन्तु यदि भारत वर्षकी सभ्यता की अन्तिम अवस्था सेभी वर्तमान समय की तुलनाकी जाताहै तो आकाश पातालका अन्तरही दिखता है।

खड्ग और ढाल बान्धे दोआदमी, सूर्य्यास्त के समय कुछ बातें कर रहेथे। आखेट में किस तरह घोड़ा फेकना होता है, रणमें क्यों कर भाला ताना जाता है, अश्व के गिरनेपर किस प्रकार सवार बच

सकता है-इत्यादि विषयों की आलोचना कररहे थे। वार्ता के मध्य मे एकने कहा-"काश्यप यहतो सब हुआ किन्तु आज प्रातः कालका मृगया में तुमने बड़ी कायरता का काम किया।

"कायरता" का नाम सुनतेही काश्यप का मुख अङ्गार के समान क्रोधमें भभक उठा। उसने सीधा म्यानपर हाथ चलाया और तरवार खींचकर ललकार कर कहा—

"कायरता-कैसी? ध्यानसिंह सम्हलना, अभी जमपुर पयान करते हो" यह कहकर काश्यप ने ऐसी जोरसे हाथ मारा कि यदि दूसरा सैनिक हाथ टेककर बैठ न जाता तो उसके दो टुकड़े होकर कट-जानेमें कुछभी सन्देहनहींथा। ध्यानसिंहने सीघ्र हाथ टेकनेकेसाथही तरवार मियान से खींची और बड़ीफुर्ती से दूसरे हाथमेंढाल लेकर काश्यप के सन्मुख कूदकर खड़ा हुआ और बोला—" ले अब वार रोको"

काश्यपका निसाना खाली गया तोभीही उसके पैतरा बदल कर ढाल सम्हाली और ज्यों ध्यानसिंह ने उसका सिर काटने को प्रहार किया कि ढालपर काश्यप ने उस वारको रोका और बैठकर हाथ चलाता हुआ इसप्रकार घूमा कि यदि ध्यानसिंह जरा हट न जातातो उसके पेटके दो टुकड़े होजाने में कुछ सन्देह नहीं था। कईबार ढालपर धमाधम तरवारे बोली, योद्धाओं का हस्त कौशल इसी प्रकार कुछ देरतक होतारहा जानपड़ा की मृत्यु के अधिष्ठाता कालान्तक दो मे से एक को अपने पास बुलाया चाहते हैं। इसी अवसर में एक ओर से सेना का एक प्रधान एकाकी "हैं-हैं-हैं--खबर दार-हाथ रोको" कहता हुआ आगे बढ़ा चला आया। उसकी आज्ञा को मान कर दोनो प्रति द्वन्दी अलग होगए। उसने इनके लड़ने का कारण पूछा और व्यर्थका झगड़ा समझकरकहा—"तुम्हारी बेकारकी लड़ाई देखकर मुझे अत्यन्त कष्ट होता है, न मालूम यह परस्पर लड़नेकी प्रकृति भारत वर्ष की कितनी हानि करेगी।"

इतना कहकर वह प्रधान आगेबढ़ा और उसके पीछे यह दोनों सैनिक चुपचाप चलने लगे। आगेसे एक सिपाही आताहुआ मिला और उसने प्रधान से कहा—"महाराज भीमसिंह और रामसिंह चौहान के घोड़े अभी लौटकर सेना में आए हैं सवारों का कुछ पत नहीं।,,

प्रधान ने पूछा—"क्या अश्वोंपर कुछ रुधिर का चिन्ह है ?"

सिपाही ने उत्तर दिया-" बिलकुल नहीं "

प्रधानने कहा—" यहतो हो नहीं सकता कि वह दोनों घोड़ेपर से गिरपड़े हों मृगया की दौड़में भी वह पीछे रहगयेथे—यह बड़ा आश्चर्य है। क्या कोई खबर लेनेगया ?"

सिपाही ने उत्तर दिया—"कई कोस तक सवार चारों ओर देख आए कहीं कुछ पता नहीं है। शिकार से लौटते हुए सैनिक अवश्य आरहे हैं पर रामसिंह और भीमसिंह का कुछ वृतान्त नहीं मालूम हुआ।

प्रधान ने पूछा—" मृग के मारे जाने कीभी कुछ खबर आई "

सिपाही ने मुस्किराकर कहा—" कुछ नहीं, अभी तक जोआता है अपने ठहरजानेही की कथा कहता है "

प्रधान ने कहा—" अच्छा चलो भीमसिंह और रामसिंह का पता लगाना अवश्य है—आजका मृग क्या, रामायण का स्वर्ण मृग होगया " !

त्रयोदश अध्याय।

झील के किनारे बड़ी दूरतक सघन वृक्षों की कतार चारोंतरफ चलीगई है। किनारे के वृक्षों का प्रतिबिम्ब पड़कर झील के चहुंओर

जहांतक दृष्टि जाती है जल में स्याम कनारा सा दिखाई पड़ता है। जलमें शान्तरस का प्रत्यक्ष दर्शन सा होरहा है। छोटी छोटी लहरें पड़कर सरोवरमे आभूषण की सी सुन्दरताको उपदर्शित कररहीहैं। प्रातःकाल के गांधर्व पक्षी अपने कलरवसे दिशाओं को हर्षायमान कररहे हैं। इस सुन्दर दृश्य के तटपर एक मन्दिर अंगूठी में जड़े हुए रत्न की उपमा के समान सुन्दरता ग्रहण कररहा है। उसी मंदिर का एक कमरदा था उस में बैठे हुवे दो गवैय्ये यह गान कर रहे थे।

(१)

दया निधि भारत की सुधि लीजे।
धन, जन नाम, बीरता, साहस इन सो पूरिताकीजे।
स्वारथ मत्ता द्वेष हीनतादिक इन सों हर लीजे।
कलियुग मेट मचावहि सतयुग ऐसी दया पसीजे।

(२)

हरि हर दोऊ गल माल विराजत।
इत कदम्ब पुष्पक धन गजरो उतगर गरल सुसाजत।
प्रेम दृष्टि सों दोऊ एकहि इत वम उत जय बाजत।

(३)

भजहु मन गिरिजा पति के चरन।
सुख सम्पदा देन वारे नित आनंद मंगल करन।
भव भय मेट बिभव के दाता प्रमुदित असरन सरन।
वम वम करत वरद है छिन में मुक्ति दान जिन परन।
ऐसे शंकरको भज प्यारे जेहि मन किल्बिष हरन।

गवैय्ये इस प्रकार अलाप रहे थे कि वीर सिपाही की निद्रा खुली। "शङ्कर शङ्कर" कहकर वह शय्या से उठकर बरामदे मे आकर खड़ा हुआ सरोवर की शोभा देखने लगा। उसको देखकर गवैय्ये भी आश्चर्य भरी दृष्टि से उसकी तरफ देखते रहगए। एकने अपने साथी के कान मे कहा—"जानपड़ता है कोई राजकुमार है"

दूसरे ने जवाब दिया—"नहीं ऐसा नहींहै। सुनाई पड़ता है कि मृगाङ्कलेखा से मार्गमे किसी राह भूले हुए सिपाही से साक्षात हु-आथा उसको कृपा करके यहां टिका दिया है।,,

यह सुनकर पहला गायक कुछ मुस्किराकर बोला—"सिपाही तो बड़ा प्रतिभाशाली प्रगट होता। इसकी तो सूरत महाराज भू-पेन्द्र विक्रम सिंह से मिलती है"

दूसरेने जवाब दिया—"मिलती हो तो क्या? स्वरूप से क्या वास्तविक अर्थ प्रगट होता है? मैं तुमको सैकड़ों भिक्षुक बतला स-कता हूं जिनकी मुखाकृति बड़े प्रतिष्ठित मनुष्यों के समान है।,,

पहले ने फिर कहा—"मेरा तात्पर्य्य यहहै कि यह मनुष्य प्रार-ब्धवान प्रगट होताहै। सम्भव है कि किसी राजकुमारी को प्राप्त करके राजा होजाय।,,

यह कहकर गायक कुछ हंसा और और नैत्रों को नचा-कर बिचित्र प्रकार से मुंह बनाकर अपने आन्तरिक भावको प्रगट करने लगा जिसका मतलब यहथा कि मृगाङ्कलेखा से विवाह इस सिपाही का होजाना सम्भव है। इस भाव को समझ कर दूसरा गा-यक शिर हिलाकर बोला--"नहीं, नहीं, यह कभी नहीं होसकता म-करन्दपुर का वीर बलराम सिंह इसमे अवरोधक होगा,,

इतनी बातके बाद उन्होंने अपना तम्बूरा और पखावज का स्वर छेड़ा और एक लम्बा स्वर भरके इस प्रकार गान आरम्भ दिया--

शिव बहु विभव प्रचारन कार।
शीश जटा तनु रङ्ग विराजत,
लोचन दुख मोचन अनियारे।
बाल सुधाधर भाल प्रभामय ,
किरनै करत प्रकाश हमारे।
गणपति अङ्क लये पंचानन,
जगमे सुखद सुकाज सम्हारे।
शैलसुता सम तासन माधव ,
विनवत चरन सरन दुखटारे।

॥ चतुर्दश अध्याय ॥

सायंकाल का समय आगया शिकार से लौटे हुए वीर बराबर आरहे हैं। पर मृगके मारे जाने की कुछ खबर नहीं आई है किलेके चारों तरफ सेना पड़ी हुई है। घोड़ों की हिनहिनाहट और टापों की आवाज आरही है। आज इस सून्य स्थान मे बड़ी रहल चहल मची है। कहीं भोजन का प्रबन्ध होरहा है, कहीं घोड़ों के चारे और घास आदि का सामान एकत्रित किया जारहा है। अपने अपने अधि-कार पर लोग दौड़ कर काम कर रहेहैं। सवारों ने आकर खबर दी है कि महाराज शिकार से लौटे आरहे हैं, उन्हीं के आगमन में सब कार्य्य बड़ी फुरती से होरहा है।

सब प्रधान सेना नायक और पदाधिकारी लोग अपने काम मे इधर उधर घूम रहेहैं कि एक वृक्षके नीचे जहांपर अनेक अवकाश पाए हुए सिपाही बैठेथे बड़ा कोलाहल का शब्द हुआ। इसको सुन-कर सेनापति रुद्रसिंह बड़ी शीघ्रता से वहां पहुंचा और उसको देखकर सब सैनिक खड़े होगये। रुद्रसिंह को कोलाहल का

कारण पूछना नहीं पड़ा क्योंकि सैनिकों के मध्यमे स्त्री वेषधारी पुरुष अपना तम्बूरा बजाकर नाचने लगा। उसका गीत यहथा-

॥ गीत ॥

सालिकराम सुनो विनती मोरी,
मोदक दान दया कर पाऊं ।
प्रात उठत पेड़ा अरु पूरी,
हलुआ, गरमागरम उड़ाऊं ।
बरफी स्वच्छ जलेबी तदुपरि,
दूध घटाघट नितप्रति खाऊं ॥
पुनि रोटी अरु खीर बतासे,
कढ़ी फुलौरी रङ्ग जमाऊं ॥
तोंद फुलाय चलूं मटकावनि,
बिस्तरपर शव सों पड़िजाऊं ॥
लै निद्रा जब उठौं सांझ को ,
भङ्ग रङ्ग मिलि मौज बढ़ाऊं ॥
फिर लुचई और पूरी पूरी ,
अमृतबती विनोद मिलाऊं ॥
याहि भांति नित पेट पुजारी,
बनिकै महिको सुरग बनाऊं ॥

इस गीतको सुनकर सम्पूर्ण सैनिक हंसने लगे। प्रधान के मुख परभी हंसी का भाव आगयो किन्तु उसने उसभाव को रोककर पूछा " क्योंजी तुमारा आना कहां से हुआ ! ,,

इस पूश्नको सुनकर गायक बोला—" क्या हमारा कोई घरहै जहां से आना हुआ—अरे हमतो यहांही रहते हैं ,,

" क्या यहां जङ्गल में रहते हो ? ,, पूधान ने यह सवाल किया

और चित्तमे विचारा कि इससे उस स्थान का कुछ पता लगेगा ।

गायक ने उत्तर दिया—" तुमारे हिसाब जङ्गल है, हमको तो मङ्गल है ,,

प्रधान ने फिर पूछा—" यह क्या कहा ? ,,

गायक बोला—"यह कि यहां सिवाय हमारे कोई रह नहीं सकता यह बीरमल्ल की भूमि है "

प्रधानने फिर प्रश्न किया—" रह क्यों नहीं सकता ? "

गायक ने हंसकर कहा—" बीरमल के साथी आकर लूटलेतेहैं। तुमभी यहां ठहरे तो रातको खैर नहीं समझना। और जो इधर घूमते फिरतेहैं उनमेसे कितनोही को कालके मुखमें पहुंचेही जानियेगा। ,,

प्रधानने पूछा—" बीरमल्ल को तुमने कभी देखा है ? "

उत्तर मिला—अभी परसोंही एक हजार बीरों को साथ लिये इसी वनमे देखाथा वह महारज से बदला लेनेकी सलाह करताथा "

यह सुनकर प्रधान ने जेबसे रुपया निकालकर गायक को दिया और कहा—" इसको यहांही रक्खोमैं इससे फिर वातचीत करूंगा"

यह आज्ञा देकर वह सैनिक अधिकारियों से परामर्श करने के लिये झपटा हुआ एक ओर गया। सबको सावधान होने को बिगुल दिया गया। दूरतक पहरा नियत होगया और घोड़े पर सवार लोग शत्रुओं का पता लगाने के निमित्त इधर उधर घोड़ा दौड़ाने लगे। जहां कहीं जरासी आहट पाते वहांहीं घोड़ा फेकते सवार दौड़कर जाते। पर शत्रुओं का कुछ पता नहीं था। थोड़ी देरमे एक ओरसे सवारोंने बिगुल देकर शंका सूचितकी और आननफाननमे सवारोंका दल उस ओर रवाना हुआ। सबसैनिक अपने शस्त्र निकालकर युद्ध के लिये सन्नद्ध होगये। " महाराज भूपेन्द्र विक्रम सिंह की जय " की ध्वनि से जङ्गल गूंज उठी।

पञ्चदश अध्याय

सरोवर के एक किनारे पर एक युवा पुरुष वृक्ष के सहारे खड़ा हुआ टकटकी बान्धे कुछ देख रहा है। उसने देखा की पार्श्ववर्ती बगीचे में मृगाङ्क लेखा एक युवा सिपाही से हंस हंसकर कुछ बातें कर रही है। वह उसको अपने सींचे हुए वृक्ष दिखा कर पुष्प दे रही है। एक क्यारी से घूम कर दूसरी क्यारी के पास का गुलाब तोड़ कर उसकी सुन्दरता की तारीफ करती हुई अनायास एक भ्रमर के आजाने से भयभीत होकर अलग हट आती है। वीरयुवा हंसकर भ्रमण को निवारण करता हुआ कहता है--" उद्यान में श्रीमती को सुगन्धि की सहोदरा जान कर मधुकर भ्रमित हो गया है। " मृगाङ्क लेखा सिपाही का धन्यवाद करती हुई हंसती है।

इस प्रकार आनन्द में निमग्न दोनों बातें कर रहे हैं। यह देख कर दर्शक युवाकी मुखाकृति बदल गई, वह क्रोध से दान्त किट-किटाकर मनमें कहने लगा—" इसका बदला न लिया तो मेरा नाम बलराम नहीं " फिर दीर्घ सास लेकर कहने लगा " क्या कभी स्वप्न में सम्भव था कि मृगांक लेखा किसी और की हो जावेगी "। इस प्रकार इसका मन शोक और क्रोध के भावों के मध्य में परिवर्तित हो रहा था कि मृगांक लेखा को एक स्त्री ने बुलाया और कहा " भोजन प्रस्तुत हो गया है " । यह सुनते ही मृगांक लेखा अन्दर चली गई और सिपाही प्रसन्न चित्त इधर उधर घूमने लगा। एकाकी बलराम जो उनको दूरसे देख रहाथा झपट कर उसकी पास आकर बोला—" तुमारा नाम क्याहै ? "

"आपकहां से आए?" यह कहकर आश्चर्य से सिपाही ने बलराम को सिरसे पैर तक देखा। मुख देखने ही से मालूम पड़ा कि यह लड़ने को प्रस्तुत खड़ा है। "तुम अपना नाम बताओ?" यह कहकर उसने बड़ी डांयट से ललकार बताई—"बिना नाम बताए तुम यहां से जा नहीं सकते हो।"

इतना कहने के साथही उसके ओठ फड़कने लगे और क्रोध की आशुमान मूर्ति बनकर वह फिर बोला—"इसप्रकार किसीके घरमें आजाना क्या चोरी का काम नहीं है?" सिपाहीने कहा—"यदि चोरी का काम भी होय तो तुमारे एसे उद्दण्डता दिखाने वालेको अधिकार क्या जो वह किसी सज्जन को अस्त व्यस्तकहै"

इतना कहने के साथही बलराम ने सिपाही की कमर पकड़कर उसे जमीन पर पटकदिया औरकमरसे कटार निकाल कर वार करना चाहताही था कि सिपाही उस से छूटकर सामने खड़ा हुआ और बड़ी फुर्ती से उसने वीरता से झपट कर बलराम का—वह हाथ जिस में कटार थी एक हाथ से थामकर दूसरे हाथ से कमर पकड़कर एसा ढकेला कि बलराम पीठ के बल चित गिर पड़ा। हाथ से कटार छीनकर सिपाही ने छाती पर घुटना टेककर बलराम को दबाया! और कहा—"कहो अभी यमपुर रवाना करूं"

इस के उत्तर मे बलराम ने फिर भी कुछ कठोर शब्द कहा और सिपाही ने लाल मुंह करके कटार को उठाया। सामने से दो वृद्ध सज्जन—"छोड़ दो, छोड़ दो" कहकर दौड़े हुये आये। उन के आतेही सिपाही ने बलराम को छोड़ दिया।

उन मे से एक ने कहा—"वीरो मैं तुम्हारे साहस से बड़ा प्रसन्न हुआ। मै यह सब लीला दूर से देख रहा था। किन्तु वीर-मल्ल की अनुपस्थिति में इस प्रकारका कायड होना कुटुम्ब की

बदनामी का कारण है। " * * * * *

इस प्रकार बहुत कुछ समझा बुझाकर वृद्ध पुरुषों ने इन लड़ते हुए युवा वीरों का बीच बचाऊ करा दिया और बलरामसिंह क्रोध से भरा हुआ बीरमलज के घर से रवाना हुआ।

षोडस अध्याय।

प्रातः काल का समय सन्निकट आ पहुंचने पर रात की प्रभा में कुछ श्वेतता की झलक आने लगी है किन्तु सैन्य समूह की चहल पहल कम नहीं हुई। पहरा देने वालों ने महाराज के लौटकर आने की खबर दी थी पर अभी तक उन का कुछ पता नहीं है। बीरमलज का राज विद्रोह चिर काल से चला आता है। सम्भव है महाराज को अकेले पाकर उसने बदला निकाला होय। इसी चिन्ता में सेनापति और सब अंगी प्रधान रातभर एक छोर से दूसरे छोर तक घोड़े फेंकते हुए दौड़ते रहे पर कुछ पता नहीं। जरा सी आहट पाकर सेना के लोग तुरंत उस तरफ दौड़ जाते और राज्य भक्ति की प्रेरणा से बड़ी उत्कण्ठा पूर्वक आगे बढ़ते-दूर से सेनापति का नाम लेकर किसी ने पुकारा। " हे सेनापति हे सेनापति "

इसप्रकार के शब्दकी आहट पाकर कई सवार दौड़े और वह जहां शब्द होता था वहां जाकर खड़े होगये। उनको वहां पर खड़े होते देखकर सेना पति बड़ी तीव्रता से घोड़ा फेंकता हुआ दौड़ा। और जाकर क्या देखा कि रामसिंह और भीमसिंह दोनों बड़े थके हुये खड़े बातें कर रहे हैं। सेनापति को देखते ही दोनों ने अभिवादन किया और उन के—" कहिये कहां रहे ? " यह पूछने पर रामसिंह ने उत्तर दिया " रहे क्या एक बड़े जाल में

फ़स गए। हम लोग मृगया की दौड़ में पीछे रहकर एकओर गान की ध्वनि सुनकर चले गए वहां जाकर बड़ी आश्चर्य भरी घटना देखने में आई। पर वहां एक ऐसा चाल आगए कि एक मनुष्य ने हम को नदी में ढकेल दिया"

यह कहकर रामसिंह ने सेना पति से जो बातें की उन से यह सूचित हुआ कि राज घराने की जिसस्त्री के भाग जाने का उपद्रव मचा था वह यहांहीं पर्वत के आस पास सघन बन में छिपी हुई है यह सब बातें सुनकर सेनापति को आश्चर्य हुआ किन्तु महाराज की लौटने की कुछ वार्ता नपाकर उस ने बड़ी व्यग्रता से कहा आप की बातों से मेरी विचार शृंखला की मजबूती होती है। मैने यह भी सुना है कि बीर मल्ल विद्रोही का स्थान भी कहीं इसी बन में है। उस स्त्री के सम्बन्ध में बीर मल्ल का नाम सुनने में आया था। इतनाकहकर सेना पति ने फिरवहे और भावसे कहा-

"इस समय महाराज का पता लगाना अवश्य है। रात को कई बार शत्रुओं के आक्रमण करने का भ्रम हो गया। एक बार तो सब सेना महाराज की जय कहकर शत्रु दल को आता देखकर दौड़ही पड़ी थी पर पीछे से मलूमपड़ा कि शिकार से लौट हुवे कुछ लोग आ रहेथे। कई सिपाहियों का पता नहीहै। और आप तो आ गये।" इतनी बात चीत करके सेना पति फिर डेरे की तरफ लौटा और रामसिंह तथा भीम सिंह अन्य सैनिकों के साथ बातें करते चले।

सप्तदश अध्याय ।

बीरमल प्रसिद्ध क्षत्रिय बंश मे उत्पन्न हुआ था। किसी समय में उस के पूर्बपुरुषों का महाराज के दरबार में बड़ा सन्मान था। किसी कारण से वह महाराज से फिर गए और विरुद्ध होकर लूटमार करने लगे। उन के पकड़ने को कईबार बड़े बड़े सरदार भेजे गए, सेना आई, घर लूट लिया गया पर वह पकड़ाई नहीं दिए। उन्हीं के बंश में यह बीरमल है। यह बीर अपने बंशधरोंकी प्रतिष्ठा को निभाए जाता है। महाराज की सेना समूह का सामना करने को असमर्थ होने से लूटमार धावा और उद्दण्डताही इस का पैतृक व्यवसाय हो गया है। इन की लूटमार से प्रजा में खलबली पड़ी थी, इन के निवास का कुछ पता नहीं चलता था। आखेट के पीछे लगे हुए लोग देवयोग से इस निर्जन स्थान मे आ पहुंचे हैं। उसका पता ठिकानाही नहीं मिला वरन एक बीर युवा बीरमल्ल के घर तक पहुच गया।

इस अवसर पर बीरमल्ल घर मे नहीं है। उन का पता बताकर नामवरी प्राप्त करना एक बीर योद्धा के लिये कुछ कम बात नहीं थी। पर जिस ने एक रात आश्रम देकर घर मे टिकाया है उसके अनिष्टका बिचारना किसी समय में भारत वर्षके राजपूतों में नहीं था। बीर सिपाही यह सोचता था कि किसी प्रकार बने तो बीरमल्ल का अपराध क्षमा करा दिया जाय क्योंकि उस का लूट मार करना लूट या स्वार्थ के निमित्त नहीं वरन बदला लेने के अभिप्राय से था। इसी बिचार की तरंगों में लहराता हुआ बीर सिपाही मृगांक लेखा से बिदा होकर द्वार पर आया। दो आदमी उस के साथ थे "जय गणेश की" कहकर वह चलेही थे कि सा-

मने से एक मनुष्य ने आकर पत्र दिया—सिपाही खड़ा हुआ पत्र खोळ कर पढ़ने लगा।

"श्री मस्तु—आप ने मेरे आश्रम को पवित्र किया-इस का मैं उपकृत हूं। मुझे तुम्हारे महाराज के मृगया के निमित्त आने की सब खबर है। सेना पति ने मेरा सब हाल जान लिया है। मैं इस स्थान को छोड़कर अन्यत्र जाकर युद्ध का अवसर दूंगा। तुम बीर हो मेरी कन्याको अपने घर आश्रय देकर रक्खो तो मैं सेनापति का गर्व क्षण भर में भस्म करूंगा। धीर हो— यह बात गुप्त रहे। मृगांग लेखा को अवसर पाकर रवाना करूंगा। किमधिकम"

बीरमल

पत्रको पढ़कर सिपाहीका हृद भर आया। वीरोचित कार्य करने के निमित्त क्षत्रिय क्या नहीं करते? प्राण सम प्रिय कन्या को छोड़ देना स्वीकार करके युद्ध से नहीं हटता। क्या बीरत्व है।

उत्तर मे सिपाही ने धर्म की शपथ खाकर कहा "आप अपने सरदार बीरमल से मेरा प्रणाम कहकर मेरी तरफ से कहिये गा कि मेरे जीते मृगांक लेखा की परछाहीं पर आघात नहीं पहुंच सकता। आप निर्भय युद्ध करें। आप की कन्या धर्म और सुख पूर्वक मेरे स्थान में रहेगी"॥

इतना कहकर धीर सिपाही ने अपना नाम और पता एक कागज पर लिखकर धर्म की साक्षी देकर पत्र वाहक को विदा किया और दो मनुष्यों के साथ अपनी सेना के साथियों से मिलने को प्रस्थान किया।

——:०——

अष्टादश अध्याय।

प्रातःकाल होतेही सेना के प्रधान प्रधान नायक महाराज का पता लगाने को निकले। दूर तक घोड़ों पर चढ़े बीरइधर उधर दौड़ने लगे—डेरे पर जो लोग रहे उनमें भी महाराज की चिन्ता के सिवाय और कुछ कार्य नहीं रहा—एक वृक्ष के नीचे कई एक मनुष्य रामसिंह और भीमसिंह से बातें कर रहे हैं। एक ने पूछा "भीमसिंह तुम्हारी समझ में क्या आता है?"

भीमसिंह बोला-"महाराज को बीरमल ने पकड़ लिया ऐसा अनुमान होता है क्यों कि इस जंगल में राज घराने की जिस स्त्री के बीरमल के पास होने की सुनी जाती थी वह यहां पर हम लोगों ने देखी और बीरमल के दूत ने धोका देकर हम को नदी में ढकेल दिया। हम लोग उस में कपटभेष को कुछ नहीं समझे और उस के जाल में फंस गए। संभव है वह महाराजको भी धोका देकर पकड़ ले गया होय।

भीमसिंह की इस बात को सुनकर सब उपस्थित लोगों के चित्त में यह बात आ गई कि होय न होय ऐसा ही हुआ होय। उन में से एक ने पूछा—"क्यों जी यह राज घराने की स्त्री कौन थी?"

भीमसिंह ने उत्तर दिया-"यह गुप्त बात है। बर्तमान महाराज की फूफी का बिवाह नहीं हुआ था। जहां पर बातचीत ठहरी थी उसे बड़े महाराज तो अच्छा समझते थे पर लड़की का पिताबीर मल के भाई को टीका चढ़ा चुका था- अनायास वह स्त्री राज महल से गुम हो गई—वह यहां पर दिखाई दी है। सम्भव है कि उस को बीरमल्ल ही उठा लाया होय।"

यह बात सुनकर हम लोग एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। एक ने कहा—महाराज भुवेन्द्र विक्रम सिंह और बीरमल्ल की लड़ाई का कारण अब समझ मे आया।

भीमसिंह ने फ़िर कहा-लड़ाई क्या आज की है? इसको पहले भी इन के पूर्व पुरुषों के समय कुछ ऐसाही बिरोध चला आताहै।

यह सुनकर एक सैनिक बोला—बीरमल्ल ने यह बड़ाही खराब काम किया। राज घराने की कन्या को उठा ले जाना बड़ा ही अनर्थ है।

भीमसिंह ने उत्तर दिया—साफ कहना बड़ी बुरी चीज हैं। महाराजके पूर्वजों ने क्या बीरमल्ल के घराने से ऐसा व्यवहार नहीं किया? मैने सब सुना है। योंही लोगों ने मेरी तरफ से महाराज का चित्त फेर दिया है उन बातों को कहकर मैं अपने शिर पर आपत्ति बुलाया नहीं चाहताहूं।

रामसिंह ने कहा—खैर, यह तो हुआ। पर बड़ा आश्चर्य है कि महाराज का अभी तक पता नहीं है। मै समझताहूं वह बीरमल्ल के फन्दे में आगए!

भीमसिंह ने कहा—इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है। बीरमल्ल बड़ाही चतुर और कुशलहै। सचतो यह है कि उसका जैसा नाम है वैसाही काम है। महाराज को भुलावा देकर ले जाना उसके लिये कुछ कठिन नहीं है। हम लोगों को धोका देकर उसके दूत ने नदी में ढकेलही दिया था।

यह बात चीत हो ही रही थी कि एक ओर से शब्द आया—"म-हाराज का अश्व मिलगया" और सब लोग एका की उस तरफ़ दौड़ पड़े।

उन्नीसवां अध्याय

भगवान प्रभाकर ही दिवस की प्रभा के नायक हैं। उनकी किरणों के प्रसाद से अन्धकार का तिरोभाव होजाता है। किन्तु पर्वत प्रान्तके उन स्थानों में जहां वृक्ष मंडल को एकत्रित करके प्रकृति देवी ने आश्रम बना दिया है वहां मार्तण्ड मंडल का प्रभाव बहुतही न्यून पड़ता है। ऐसे ही एक शून्य स्थान में मार्ग सूचक दो मनुष्यों के साथ वीर सिपाही जा रहा है। उसके दोनों श्वान इधर उधर कूदते चलते हैं। कभी वह आगे दौड़कर हरित कुंजों में घुस जाते, कभी पीछे ठहर कर इधर उधर ठिठक कर परस्पर खेलने लगते और वीर सिपाही के पास पहुंच कर स्वामि भक्तिका परिचय देते हुए कूदने लगते। सिपाही अपने ध्यान में पर्वत प्रान्त की सुन्दरता देखता हुआ चला जारहा है। उसके साथी चुप चाप आगे चल रहे हैं। कुछ दूर चल कर मार्ग दो पहाड़ों के बीच में होकर गया था। "बड़ा दुर्गम स्थान है" यह कहकर सिपाही अपने साथियों के सहित उसमें धसा ही था कि बाहर से कुत्ते बड़े ज़ोर से भौंके। एक कुत्ते पर कुछ चोट पड़ने का शब्द आया और उसके "पें पें" करतेही सिपाही ने लौटकर देखा—सा मने से बलराम ४ आदमियों के लिये हुए दिखाई पड़ा।

देखते ही सिपाहीने अपना शस्त्र संभाला और कहा—"क्या विचार है?" उत्तर में बलराम ने खड्गम्यान से खींच कर कहा—"लेवचना। शेर की गुफा में आकर उसको ललकारने का यह फल है" सिपाही ने शीघ्र अपना भाला ताना और पूछा "एक एक लड़ोगे कि सब?" और इतना कहकर उसने पीछे को पैतरा बद-

था—पर पीछे जगह नहीं थी पहाड़ पर पैर पड़ा और पर्वत का सहारा लगा कर वह वीर खड़ा होगया।"

भारत वर्ष के प्राचीन लोगों में शत्रुभाव होने पर भी धर्म और कर्तव्य का कुछ न कुछ ध्यान अवश्य रहता था। अकेले मनुष्य पर सबका प्रहार करना कायरता में गिना जाताथा। बलराम के साथियों ने पीछे हटकर एक स्वर से कहा "एक एक लड़ेंगे"

इतनी बात के पश्चात् सिपाही को जगह दी गई और बलराम का एक साथी तरवार खोल कर सामने खड़ा हुआ। सिपाही ने अपना पैतरा बदला। फौरन भाला तान कर शत्रु की गर्दन पर चलाया ही था कि उसने भाले की नोक अपनी ढाल पर रोकी और झुक कर तरवार का वार करने का झपटा ही था कि उसके साथी "वाह वाह" कर उठे। वीर सिपाही जमीन पर भाला टेक कर यदि उछल कर तरवार को लांघ न जाता तो उसके कट जाने में कुछ बाकी ही नहीं रहा था। उसकी इस फुर्ती को देखकर शत्रु "अहह" करके प्रसन्न होगए! पर उसने अपने विरोधी को दूसरा प्रहार करने का अवसर ही नहीं लेने दिया और भाले का निसाना लगाकर उसकी तरवार पर इस प्रकार पटका कि हाथसे तरवार निकल कर झननन करती पत्थरों पर जाकर गिरी। सिपाही के पसीना आगया और वह स्वांस ठीक करके बोला "आवे अब और कौन आता है।"

इस शब्द को बलराम सहन नहीं करसका और तरवार म्यान से खींचकर खड़ा हुआ। इसी क्षण में सिपाही को मार्ग बताने दो क्षत्रिय जो आगे बढ़ गए थे लौटकर फिर आए और बलराम को देखकर बोले—"बस बस तरवार म्यान के अन्दर करो"

बलराम कुछ रुका और उन में से एक ने कहा—"यह अच्छी

बात नहीं है। वीरबल से अभ्यागत के इस प्रकार का बर्ताव करना रुधिर का सोता बहाने का आरम्भ करना है। यह लड़ाई अपनी ऐसी विकराल मूर्ति धारण करे गी जिस का फल बहुत अनिष्ट कर होगा।"

दूसरा क्षत्रिय बोला—"बेटा बलराम तुम को क्या हुआ है। अभ्यागत से लड़ते हो। इस पाप का कहीं ठिकाना है। जब हमारे सहायकों से तुम यह बर्ताव करो गे तो एक घड़ी गुज़ारा नहीं चल सकता।"

इतना कहकर उस ने खड्ग पकड़कर म्यान में कर दिया। बलराम का आलिंगन करके क्रोध शान्त किया और बीर सिपाही के गले मिलाकर परस्पर उपदेश करने लगा। बलराम ने कुछ नहीं किया। यह क्षत्रिय उस का सम्बन्धी भी था। कुछ लज्जा, कुछ क्रोध और कुछ उपदेश के प्रभाव से उस को कर्तव्य भूल गया और वह गले मिलकर चुप चाप खड़ा हो गया। बीर सिपाही ने कहा—"भाई बलराम तुम्हारी वीरता से मैं बड़ा प्रसन्न हुआ"

"क्षमा कीजिये गा" यह कहकर लज्जित बलराम अपने साथियों सहित पीछे की तरफ रवाना हुआ और सिपाही दोनों साथियों के साथ डेरे की ओर चला।

बीसवां अध्याय।

महाराज का घोड़ा मिल गया पर उन का कुछ पता नहीं है यह खबर सारी सेना में पहुंच गई। सवार पैदल सब व्याकुल इधर उधर घूमते हुए सेना पति की तरफ दौड़े।

सेना पति का घोड़ा बहुत दूर बढ़ गया। महाराज का घोड़ा किस प्रकार और कहां से मिला इस का वृत्तान्त जानने की सेना भर में अभिलाषा प्रगट हो गई। मनुष्यों का स्वभाव है कि जब

वह अभीष्ट विषय को जानने के लिये उत्सुक होते हैं तब अपनी तरफ से भी कल्पना करने लगते हैं। समझदार लोग अनेक बातों से अनुमान निकालते हैं किन्तु छोटी समझ के लोग मन की कल्पना के अधिकार में पड़कर कल्पना को निश्चय में परिणत करने लगते हैं। इस नियम के अनुसार एक ने कहा—महाराज पकड़ लिये गए-दूसरा बोला—उन को हिंसक जीव ने मार लिया तीसरे ने कहा—घोड़े पर से गिर पड़े इत्यादि अनेक बातें श्रवण गोचर होने लगीं। पर असली बात जानने के अभिप्राय से लोग सेना पति के समीप दौड़े।

जिन के स्वभाव में अधिक तेजी थी वह आगे बढ़े, कुछ लोग पीछे से चले बाकी बूढ़े और चिन्तित तथा शान्त प्रकृति के लोग सब से पीछे चलने लगे। पीछे चलने वालों में रामसिंह और भीमसिंह भी थे। कुछ दूर चलकर उन की यह बातें होने लगीं।

रामसिंह—क्यों मित्र यदि महाराज वास्तव में पकड़ लिये गये तो बड़ा अनर्थ हुआ।

भीमसिंह—इस में चिन्ता क्या? अपना २ मौका सब को ही मिलता है वीर मल्ल के साथ जैसा कठिन वर्ताव किया गया उस को देखते यह कुछ भी नहीं है।

रामसिंह—पहले तो बीरबल ने ही की जो रमा देवी के राज महल से ले गया। क्या यह पाप नहीं है।

भीमसिंह—सच पूछिये तो यह कुछ भी पाप नहीं है। इधर पराई कन्या को मंगाकर जे आना इस की चाल सी पड़ गई है।

रामसिंह—यह चाल देश का सर्बस्व बिगाड़े गी।

भीमसिंह—मैं इस बातका पक्षपाती नहीं हूं, और न मेरे कहने का यह अर्थ है कि किसी की कन्या को झगड़ कर छीन लाना उत्तम है, किन्तु प्रयोजन यह है कि इस प्रकार के आसुरी विवाह आजकल इतने अधिक चल गए हैं, जिनसे अब इस निषिद्ध कार्य्य की निषिद्धता जाती रही।

रामसिंह—अधिक लोग जिस निन्दनीय काम को करने लगें तो क्या वह उत्तम होजावेगा?

भीमसिंह—होजावेगा नहीं किन्तु समझा जावेगा-ऐसा कहना उचित है। अच्छा तो इस प्रथा के अनुसार वीरमल्ल राजघराने की कन्या को उठा लेगया तो दोष क्या? जब महाराज स्वयं प्रत्येक स्वरूपवती कन्याको छीनने का अधिकार रखते हैं तब उन की कन्या को छीनने का दूसरे को अधिकार क्यों नहीं है।

रामसिंह—क्या सब मनुष्य बराबर हैं।

भीमसिंह—अन्य विषयों में चाहे बराबर न हों किन्तु सामाजिक नियमों में सबकी समानता है। इस प्रकार यह लोग बातें करते हुए कुछ दूरतक चले और फिर रामसिंह ने कहा—" यदि महाराज पकड़ लिए गए तो बड़ा अनर्थ हुआ "

भीमसिंह ने उत्तर दिया—" पकड़लिए गए तो कुछ आश्चर्य्य नहीं—देखो अभी आगे चलकर सब मालूम हुआ जाता है " यह कहकर इन्होंने अपने घोड़े की लगाम खींची क्योंकि सामने से इनको घोरध्वनि का कुछ शब्द सुनाई पड़ा। अब यह आगे बढ़े पहले कुछ अस्पष्ट शब्द जान पड़ा, फिर कुछ अक्षरों की ध्वनिसी श्रवण गोचर हुई और आगे बढ़कर " महाराज भूवेन्द्र विक्रमसिंह की जय " यह वाक्य स्पष्ट सुनाई देने लगा। इतने में सामने से एक सवार आता हुआ दिखा—उससे यह लोग क्या हुआ क्या हुआ " कहकर पूछने लगे।

सवार ने बड़ी फुर्तीसे घोड़ा रोककर कहा—"सेनापति की आज्ञा है सब सैन्य समूह राजधानी को प्रस्थान करे" यह सुनकर रामसिंह ने पूछा—"महाराज का क्या पता लगा ?" उत्तर दिया—"वह राजधानी को सवार होगए"।

इस वार्ता का रहस्य जानने के निमित्त रामसिंह और भीमसिंह दोनो सेनापति की ओर घोड़ा फेंकते हुए बढ़े।

इक्कीसवां अध्याय

प्राचीन समय में जब कुर्सी पर बैठने की चाल नहीं थी तब दर्बार के बीच में सुन्दर गलीचों के फर्श और उनके चित्र विचित्र रंग बड़ेही मनोहर मालूम पड़तेथे। इसी प्रकारका एक परम सुहावना फर्श दर्बार मन्दिर में बिछा है। सामने स्वर्ण सिंहासनपर महाराज भूपेन्द्र विक्रमसिंह बैठे हैं। सिंहासन के सामने रंगबिरंगे बेलबूटों का कार्चोन चमक रहा है। दाहने और बायें महाराज के दर्बारी सुनहरी और रूपवती प्रभा से अलंकृत पागेबांधे सुशोभित हैं। दीवार के पास सुवर्ण के आशा बल्लम छत्र आदि चिन्ह लिये सेवक खड़े हैं। सिंहासन के पीछे दो पुरुष चामर कररहे हैं। मन्त्री अपने कागजपत्र लिए राज्यासन के नीचे विराजित हैं। सब के चहरोंपर उत्साह, आनन्द और साहस झलक रहा है। दर्बार के आरंभ में भाटों ने कुछ स्तुति पढ़ी, पश्चात् मन्त्री ने कुछ वैदेशिक राज्यों के पत्र पढ़कर सुनाये, दर्बार अर्थात् राज्य सभा के सभासदों की कई बातोंमें सम्मति लीगई। पश्चात् बाहर से आएहुए दूत या एलची एकएक करके महाराज के सामने उपस्थित किएगए

मगध देश के एलची या राजदूत ने अपने राजा की ओर से भेट अर्पण की और निवेदन किया कि वह महाराजा की मैत्री से परम सन्तुष्ट हैं। सौराष्ट्र देश के राजदूत ने सामुद्रिक लुटेरों की

कथा सुनकर सहायता की प्रार्थना की। इसी प्रकार अन्य राजपूत भी अपनी २ प्रार्थना कहकर नियोजित स्थान पर बैठे। इतने मे एक पत्रवाहक ने आकर पत्र दिया। दर्बार के प्रबन्ध कर्ता ने वह पत्र महाराज के सामने रक्खा। उस पत्र को पढ़कर महाराज ने आज्ञा दी—'इन लोगों को यहां लेआओ—'इसकेबाद एक स्त्रीको साथ में लिये दो सैनिक राज दर्बार में उपस्थित हुए।

जिस प्रकार चन्द्रमा को देखकर चकोर टकटकी लगा लेतेहैं, श्याम मेघ को देखकर चातक ऊपरी दृष्टि कर लेते हैं, इसी प्रकार राज सभा के सम्पूर्ण सदस्य इस स्त्री की ओर देखने लगे। स्वरूप भी विधाता ने क्याही अनुपम पदार्थ बनाया है! साधारण वस्त्र पहने और अलंकार रहित होने पर भी इस सुकुमार वनिता की छवि दर्शकों का मन अपनी ओर आकर्षित कर रही है। कौन है? परी है, अप्सरा है। यह क्यों आई है? इत्यादि शंकाए सब के चित्त में होने लगीं। औरश्नीची दृष्टि किए वह स्त्री सिंहासन के पास तक पहुंची उस को देखकर महाराज भूवेन्द्र विक्रमसिंह सिंहासन से खड़े हो गये—और सर्व सभासद खड़े हो गए। वनिता ने एक बार ऊंची दृष्टि करके देखा और महाराज को पहचान कर ओष्ठ दबाकर नीची दृष्टि करके रह गई। स्त्री के चित्त में जो भाव हुआ वह प्रत्यक्ष था। जो सिपाही रूप में उस के घर पहुंचा था वह महाराज भूवेन्द्र विक्रम सिंह उस के पिता वीरमल्ल का परम शत्रु है। उस की सभा में एक की आकर वह आश्चर्य मे निमग्न हो गई। उस समय देश में स्त्रीमात्र की प्रतिष्ठा औरउस को अवध्य समझकर आदर करने की चाल थी सही किन्तु हिंदुओं के अधःपतन का समय आरंभ हो गया था। पराई कन्या को छीन कर बलात् विवाह करने का एक नियम होने लगा था। इन सब बातों का स्मरण होकर मृगांक लेखा को कठिन भविष्य दिखने

लगा। किन्तु उस को चिरकाल तक चिन्ता में नहीं रहना पड़ा। महाराज ने 'विक्रम सिंह यहां आओ' कहा और एक वृद्ध सरदार उन के सामने आकर खड़ा हुआ और बोला 'क्या आज्ञा है?

महाराज ने कहा—देखो, यह वीरमल चौहान की कन्या मृगाङ्कलेखा है। मैं ने इसे धर्मपूर्वक रक्षित रखने की प्रतिज्ञा की है। तुम्हारे पुत्र बलराम का इसपर अत्यन्त प्रेम है। इसको तुम अपने घरमे लेजाकर पुत्री की तरह रक्खो—देखो मेरी प्रतिज्ञा का पालन तुम्हारे ही हाथहै। वीरमल ने इसका विवाह बलराम से करने का निश्चय कर लिया है। जब तक विवाह का प्रबन्ध तथा वीरमल की स्वीकारता न होजाय तबतक यह सुकुमार ललना तुम्हारीही रक्षा में रहे।

महाराज की यह आज्ञा सुनकर सब "वाह वाह,, करने लगे। मृगाङ्क लेखा को साथ लेकर वीर विक्रम सिंह अपने स्थान को विदा हुए।

परिशिष्ट

महाराज का यह बर्ताव सुनकर वीरमल बहुत प्रसन्न हुआ और कई राजपूतों ने बीच मे पड़कर महाराज का और उसका एका करा दिया। मृगाङ्कलेखा का बलराम से विवाह होगया। और राज घराने की रमादेवी जिसको रामसिंह और भीमसिंह ने मन्दिर मे गाते हुए देखा था लौटकर राजधानी मे आई और बलराम के भाई अर्जुनसिंह से उसका पाणिग्रहण हुआ। जो वीरमल महाराज का परम शत्रु होरहा था वह परम शुभचिंतक होगया। राजा के लिये दया का बर्तावभी एक बड़ी भारी शक्ति होताहै।

इति